# मालती जोशी के `विश्वास गाथा` उपन्यास में धार्मिक आस्था का स्वर

बबीता चौहान
शोध छात्रा
स्नातक एवं स्नातकोत्तर हिंदी विभाग
बलभीम कॉलेज, बीड.

डॉ. राजेंद्रसिंह आ. चौहान
सहयोगी प्राध्यापक एवं शोध निर्देशक,
स्नातक एवं स्नातकोत्तर हिंदी विभाग, बलभीम कॉलेज, बीड.

*मालती जोशीजी का समकालीन महिला कथाकारों में विशिष्ठ स्थान है। उनका यह अपना अलग विशिष्ट स्थान उनकी लेखन शैली के कारण ही बना है। क्यों कि उन्होंने अपने लेखन में नारी मन की टूटन-घुटन, अकेलापन और आक्रोश तथा अपनी स्वयंकी निर्णय क्षमता को अपने उपन्यासों में व्यक्त किया है।*

मालती जोशीजी ने बहुत कम साहित्य धर्म से सम्बन्धित लिखा है परंतु उनका 'विश्वास गाथा' उपन्यास पाठकों में अंधविश्वास के प्रति आस्था जगाता है। नायिका के पति का किसी बाबा पर अटूट विश्वास है। उसी के सहारे वे कार्य करते हैं। उनकी आस्था को आलम्बन की आवश्यकता थी और उन्होंने उसे ढूंढा। उनका कहना था कि बिना आत्मविश्वास के आस्था जगती नहीं और बिना आस्था के श्रद्धा पनपती नहीं। करना तो व्यक्ति को ही है पर आस्था बडा सम्बल देती है।

मालती जोशी के 'विश्वास गाथा' को उपन्यास कहें या अंध विश्वास की पोटली। परन्तु इसके मुख्य पात्र का आचरण देखकर आश्चर्य होता है। कहने के लिए तो वह फर्स्ट क्लास कैरियर का चार्टर्ड एकाउंटेंट है। उनकी वेशभूषा और उनका आधुनिक विचार धारावाला परिवार देखने के बाद, उनका साधु संतों पर विश्वास करना बडा अजीब लगता है। पता नहीं वे किस चक्कर में आ गये थे। एक बार उनकी पत्नी ने उनसे पूछा था तब उन्होंने उसका जवाब यूं दिया था- "मन के किन्हीं कमजोर क्षणों में उनके चरणों का आश्रय ले लिया था। तब इतनी शान्ति मिली थी कि उस सुख से मोह-सा हो गया है। अपनी सारी परेशानियां, सारी चिन्ताएं उन्हें सौंपकर मैं बहुत हल्का अनुभव करता हूँ।"' एक चार्टर्ड एकाउंटेड के मुख से ऐसी भाषा सुनना बडा विचित्र लगता है। वह अपने पति के साथ स्वामी जी के दर्शन के लिए गयी भी थी। एक स्नेहशील बुजूर्ग के अतिरिक्त उसे किसी भी कोन से वे अलौकिक नहीं लगे। पति के समान श्रद्धा तो उसमें जगी ही नहीं। पति ने जब उससे कहा कि उस रात यदि महाराज ने अंतप्रेरणा न दी होती तो वे उसे लिवा लाने कभी नहीं आते। उनमें उस प्रकार का साहस स्वामी जी ने भर दिया था। शादी होने के बाद बिना दुल्हन लिए बारात का लौट जाना, लड़की के लिए बडी बदनामी की बात होती है। लड़की न तो कुंवारी रहती है न शादीशुदा। इसीलिए इस उपन्यास की नायिका स्वामीजी के ऋण से उऋण नहीं सकी।

नायिका की शादी की रात थी। उस दिन वह बारात की, रिसेप्शन की, शानदार डिनर की, दहेज की, चढावे की और फिर दूल्हे की। सब की सब ईर्ष्या से जल उठी थी। नायिका का खुश होना स्वाभाविक है परंतु घर के और लोग भी प्रसन्न थे। पापा प्रसन्न थे। कारण उनकी जिम्मेदारियाँ समाप्त हो गयी। चाचा-चाची खुश थे कि उन्होंने कन्यादान का पुण्य लूटा। बुआ खुश थी कि अमिता को वर अच्छा मिला। दीदी नाराज थी कि उससे अधिक खर्च अमिता की शादी में किया। सब का कहना था कि उसका वर सुनीता के वर से अच्छा था।

होम हवन होते - होते रात का एक बज गया था। अनिता इतनी थक गयी थी कि वह चाहती थी कहीं जगह मिले तो चुपचाप लेट जाए। वह ऐसे लेटने जा रही ती कि चाची ने सूचना दी कि अंतिम पंगत थी जिनके लिए फिर से मैं मैं हो गयी। अनूप ने कुछ ज्यादा ही कडी बात कह दी और सबने खाना छोड दिया। सबका कहना था अनूप आकर माफी मांगे। पर उदय



Scanned by CamScanner